Item Code: 645

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം തിയ്യതി 17-01-2026 പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി

Participant Code: 045

नारियाँ - नौकरी क्षेत्रों में

प्रस्तावना :-

इक्किस्वी सदी में महिलाओं का जीने के हालों मे बदलावें आई है। पहले की तरह कभी भी नहीं है। स्त्री समूह की परिवर्तन देश और दुनिया की विकसन और बढ़ाव के लिए अच्छा है। नारीजन अपनी सविशेषताएँ और सर्गात्मकताओं को कुछ अच्छे तरीकों में विश्लेषण कर पा रहे हैं। आज की अपनी वनिताएँ रोजगारी से खुद कमाते हैं। किसी दूसरे के आश्रय से छूटकर, वे उनकी पहचान प्रघोषित करते हैं। वनिता केंद्रीकृत शाखाओं में नहिं, हर एक शाखाओं में महिलाएँ

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

उनकी शान दिखा पाते हैं। वनिताएँ नौकरी करके उनका अनाज़ उगा लेते हैं। शिक्षा केंद्रीत शाखा में भी वे चमके जा रहें है। पिछले सालों या पिछले सदियों में कभी भी महिलाओं को इतनी ऊँचाई छूना कभी भी मुमकिन नहीं था।

यहीं महिला, नौकरी करके उनके जीवन में सफल हो जाते हैं। अध्यापिका, डॉक्टर, नर्स, कंप्यूटर टेक्नि, आदी नौकरियाँ में महिला कभी भी कमज़ोर नहीं हो पाती। स्त्री शक्ति की चेहरा उनकी दम में दिखाई देता है। कभी भी कमरों के अंदर नहीं दुनिया की चारों कोनों उनकी विजय की पताकाई दर्शाते हैं।

महिला सशक्तिकरण की मूल भी वनिताओं ~~की~~ के खर्च, वर्ण, जाती आदी नहीं है, वह उनकी संवेदनाशीलता, होशियारी और खुद कमाते वेतन हैं। इस अवसर पर जहाँ, आज की महिलाँस नौकरी की व्यवहारों में आ रहें हैं, "नारियाँ - नौकरी क्षेत्रों में" विषय की बहुत अधिक प्रसक्ति है। यह निबंध द्वारा महिला सशक्तिकरण नौकरी क्षेत्रों में कैसे होता है, उसकी जानकारियाँ

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം തീയതി..... പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി

हम पा सकते हैं। अपनी नारियाँ अपनी देश की चमकान हैं। और वे तारों की तरह और ज्यादा चमके।

विषय-विस्तार :-

नौकरी क्षेत्रों में स्त्रीसमाज की व्यवहार इस सदी में पिछले समयों से भी बढ़ चुका है। इंडिया (भारत) महासाम्राज्य में आज की वनिताएँ उसकी शान उनकी विभिन्न सविशेषता और होशियारी से उठा रहीं हैं। इसमें उनकी सबसे बड़ी कामयाबी उनकी रोजगारी ही है। वनिता उनकी जोश और जोखिमपूर्णता से लिंगविवेचन से लड़ रहे हैं। खुद काम करना और खुद कमाना उनकी आत्मसम्मान की ताकत ज्यादा ऊँचा करते हैं। उनको जो मौके मिल रहें हैं, उनका सही इस्तेमाल करके वे विवेचनों से लड़ पाते हैं।

पिछले सदियों में स्त्रीयों को उनकी छोटी उम्रमें शादी करवाके भेज देते थे। यह अपनी देश की ही बात है। करीब दस से चौदह साल की उम्र में लड़कियों को शादी कराते थे।

वहीं से उनकी पढ़ाई भी बंद हो जाती थी। कई लड़कियाँ बचपन से ही निरक्षर रहते थे। गाँव वाले जगह ज्यादा होते थे उन समयों में, तो वे (लड़कियाँ) खेत, तालाब, बाघ आदी जगहों में या बगीचों में बहुत काम करते थें, बिना वेतन के। उनकी जीवन किसी भी तरह की उम्मीदों से छूट पड़ी थी। अपने पतियों, बच्चों, घरवालों की हाल संभालने के लिए वे निर्बंधित थे। कुछ काम खुद करके कमाने का कोई भी रास्ता उनके सामने नहीं था।

महिलाओं को किसी भी तरह की परिगणना नहीं मिलती थी। स्त्री को अच्छी नौकरी से अच्छी वेतन मिलने के लिए शिक्षा पाना बहुत आवश्यक है। तालिबान जैसे दुष्मनों के व्यवहारें कई महिलाओं को निरक्षर छोड़ दिया है। उदाहरण है कि, जब पाकिस्तान में तालिबान का आक्रमण हुआ। इस समयों मे कई पाठशालाएँ बंद की गई। लड़कियों को कभी भी नहीं पढ़ने का ज़िद पड़ाया गया। इस समय बारह साल की मलाला युसुफज़ई ने पत्र लिखने, वाक्य/शब्द संदेश देने द्वारा इस नियम से लड़ाई की। यह दुनिया भर की महिलाओं

के लिए एक अच्छा, ताकतवर संदेश था। इस कारण से उसे तालिबान की गोलियाँ उसके शरीर में लेनी पड़ी। फिर भी दुनिया भर की महिलाओं के लिए वे बहादुर और ताकतवर थी। उसे समाधान की नोबेल पुरस्कार सम्मान किया गया था। यह महिला रोजगारी की उच्चस्व कदम थी।

स्त्री शिक्षा की सशक्तिकरण द्वारा महिला रोजगारी भी शक्त हो पाई। कई क्षेत्रों में बहुत कामयाबी से ही नारियाँ रोजगार कर रहीं हैं। वे नौकरी करतें, खुद कमाते हैं। अपनी स्वकार्य कार्य या खर्चों के लिए किसी दूसरे को आश्रय मे लेना कभी भी स्वतंत्रता नहीं है। अपनी आवश्यों के लिए खुद खर्च करनेवाली स्त्री उसकी जीवन की सफलता को छू पाती हैं। रोजगारी स्त्री स्वपहचान और स्वतंत्रता की प्रतीक हो सकती हैं।

चाहे, अलग दिशा से देखें तो महिला रोजगारी बढ़ने के इस अवसर पर भी कई महिलाएँ बेरोजगार रहते हैं। इसे कई कारणों से विश्लेषण कर सकते हैं। पहला कारण तो हमेशा शिक्षा की दुर्लभ्मता है। कई महिलाएँ आज भी रोजगारी

परिवर्तन मे नहीं आ चुकी है। उनको शिक्षा देने के लिए केरल सरकार भी 'समूल्य' पढ़ाती है। एस.एस.एल.सी एक्सामों भी निरक्षर वनिताओं को पढ़ाई के साथ मिलता है। तो विज्ञान प्राप्ती के बिना हमारी नारियाँ नौकरी क्षेत्रों में कभी भी ऊँचाई में नहीं पहुँचेगी। अगला कारण है शैशव विवाह और गार्हिक पीड़न। जैसे ये पहले कहा गया, छोटी उम्र में ही लड़कियों को शादी करवाने की वजह से उनकी शिक्षा बंद हो जाती है। परिवार की बातों में हमेशा मशगूल रहना पड़ता है उन्हें। परंपरा के अनुसार महिला परिवार संभालकर घरों में ही रहने की चुनौती सामना करती हैं। घरवालों कई तरह की गार्हिक हमलाएँ महिलाओं करते है। कुछ घरों में तो यह हमेशा नारियों को उनके पढ़ाई, रोज़गारी के सपनों से छुटाते हैं। और एक दुरंत कारण है, महिलाओं की असुरक्षा। पोतुजन जगहों में भी स्त्री कई तरीकों में बलात्संग में पड़ जाती हैं। इस कारण से भयकर वनिताएँ रोजगारी की दिशा में आना मना करती हैं। जातिवाद, धार्मिकता, आदी कारणों से भी महिलाओं की नौकरी की कमी एक बड़ी समस्या

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം തിയ്യതി..... പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി

के रूप में आगे जा रही है। नारीजन नौकरी क्षेत्र में सामना करने वाली एक और प्रश्न है तुल्यता की कमी पुरुषों से भी कम वेतन नारियों को किया जाता है। जहाँ स्त्री-पुरुष साथ काम करते हैं, वहाँ यह प्रश्न ज्यादातर दिखाई देता है। समान रोजगारी में समान वेतन मिलना अनिवार्य है। जहाँ स्त्री और पुरुष समान नौकरी करतें हैं वहाँ उनहें तुलय वेतन देना चाहिए। कभी भी, कैसे भी स्त्री समूह का तिरस्कार नहीं करना चाहिए।

नौकरी करती महिला एक खूबसूरत दृश्य है, जो स्वतंत्रता, मानविक संवेदना, महिला शक्ति आदियों को दर्शाते हैं। महिला, उसकी पहचान तब बनाती है, जब वह एक नौकरी अपनाकर खुद कमाती है। नारीजन अपनी सर्गशक्ति को बाहर लाके मेहनत करनी चाहिए। तभी, वह उसकी सविशेषता और सगतिमकता को अच्छे तरीके मे विश्लेषण कर पाएगी। हर महिला अपने आप पहचान में जाने जानना अनिवार्य है। महिला सशक्तिकरण सिर्फ एक लक्ष्य नहीं, वह एक कर्तव्य भी है। कमरों के अंदर नहीं, बाहर, दुनियाँ की चारों दिशाओं मे महिला शक्ति की, पहचान की, रोजगारी की

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം തീയതി..... പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി

शान दिखनी चाहिए। रोजगारी स्त्री स्वपहचान और स्वतंत्रता की प्रतीक है।

निष्कर्ष :-

निष्कर्षतः एक सुंदर, समांतरीक्ष देश और दुनिया पहले स्त्री-पुरुष एकता और तुल्यता से शुरू होती है। इसीलिए महिला और पुरुष, दोनों देश की अभिवृद्धी के लिए प्रयत्न करना चाहिए। वनिताएँ नौकरी करके अनाज़ उगाना है। खुद कमाना सबसे सम्मानित बात है। नौकरी करने वाली महिला उसकी उपजीवन बिना किसी और के खुद कर पाती है।

नौकरी क्षेत्रों मे वनिताओं की निक्षेप पुरुषों से समान होनी चाहिए। नौकरी क्षेत्रों में स्त्रीसमाज का व्यवहार इस सदी में हमेशा बढ़ना चाहिए। इसमें उनकी सबसे बड़ी कामयाबी उनकी रोजगारी और नोकरी में शामिल है। लिंगविवेचनहीन सुंदर देश होना चाहिए अपना भारत। वनिताओं की शिक्षा के बारे में हमेशा जोश चाहिए। स्त्री शिक्षा की गंभीर सशक्तिकरण द्वारा महिला रोजगारी भी शक्त हो

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം തിയ്യതി..... 64-ാം പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി

Item Code: 645 Participant Code: 045

पास्गी।

महिलाओं रोजगार रहना अभिमान की बात है। इस निबंध का विषय जो महिला रोजगारी के बारे में बातें करता है, वह शायद ही नहीं, ~~बिल्क~~ बिल्कुल एक जबर्दस्त काम है। इस निबंध द्वारा "नारियाँ - नौकरी क्षेत्रों में" कैसे उच्च और नीच वगैरह कार्यों को शामिल किया और विश्लेषण किया भी है। चुनौतियों के कारण और परिणामों को भी।